स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले से

प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी

का

<u>भाषण</u>

दिनांक: १५-८-१९६४

पी०एम०(३)टी०एस०: १२०४१
१२०४२

बहिनो और भाइयो,

आज से चालीस वर्ष पहले की बात मुझे याद आती है, जब हम नौजवान थे। एक वालियंटर और सिपाही के नाते हम कहा करते थे कि जिस दिन लाल किले पर हम आजादी का झंडा फहरायेंगे, उस दिन ही हमारी आजादी पक्की होगी। हमने यह भावना उस अपने बहादुर नेता से पायी थी, जिसका नाम हम कभी भूल नहीं सकते। जवाहर लाल जी हमारे देश की आजादी के बड़े से बड़े सिपहसालारों में थे और आजादी के आने के बाद उन्होंने देश के बनाने का काम अपने हाथ में उठाया। देश के वह कर्णधार बने और १७ साल तक लगातार दिन और रात एक कर उन्होंने आजादी को संजोया, और उसको मजबूत बनाया। हमें याद है कि १५ अगस्त सन् १९४७ को इस देश में क्या जोश था, क्या उमंग थी और ऐसा लगता था कि जैसे अपनी खोई हुई निधि, अपनी खोई हुई पूंजी हमने हासिल की है और हमने अपने दिल से अपनी आजादी की पूंजी को लगा लिया। १७ साल तक या १६ साल तक आपने लगातार इस जगह से एक वह सुन्दर और स्वस्थ्य प्रतिमा देखी थी जो जवाहर लाल जी की प्रतिमा थी। इस जगह पर जिस साहस और हिम्मत से वह खड़े होते थे, जिस तरह से देश का मार्ग-दर्शन करते थे उसे भूलना कठिन है। हमने कुछ ऐसा उनको अपनी आंखों में और अपने दिलों में बसा लिया था कि हम समझते ही नहीं थे कि उनसे हमें कभी अलग होना पड़ेगा। लेकिन एक अजीब शक्ति दुनियां में काम करती है, जिस शक्ति पर, जिस ताकत पर हमारा काबू नहीं है और आज वह हमारे

बीच में यहां नहीं हैं, आज उनकी गम्भीर आवाज़, और हमको और आपको आगे ले जाने वाली आवाज मौन है, लेकिन वह देश के लिए इतना कर गये, हमारे लिए इतना छोड़ गये कि एक ऐसी बड़ी पूंजी और थाती हमें मिली है, जिसको हमें बड़ी जिम्मेदारी से निभाना है।

यह आज इस तरह जो वर्षा हुई है, एक माने में यह वर्षा और यह पानी देश के लिए भलाई के लिए है और इससे देश का भला होगा। लेकिन इसके पीछे हमें यह भी देखना है कि हमें कठिनाइयों और मुसीबतों का भी सामना करना पड़ेगा। अगर हमने यह समझा कि देश के बनाने का काम एक सहल काम है, एक सीधा-सादा काम है, हम एक साफ रास्ते पर चलते चले जाएंगे, तो यह बड़ी भूल होगी, और हमें यह अनुभव करना है कि जिस तरह से आज इस वर्षा ने, इस पानी ने थोड़ी हमारे रास्ते में रुकावट डाली, उसी तरह से कठिनाइयों का सामना हमें करना पड़ेगा, लेकिन जब ~~हम~~ उनपर हम जीत पाएंगे, तब फिर अपने देश में हमें सुख और समृद्धि का दृश्य देखने को मिलेगा।

हमें याद रखना है कि हम आज बहुत से सवालों से बन्धे हुए हैं और हमारी मुश्किलें और कठिनाइयां कम नहीं हैं। अभी अभी एक महीने, डेढ़ महीने से खाने का सवाल, अन्न का सवाल कठिन बन गया है, खास तौर से कुछ सूबों में, जो आपके पड़ौस में हैं उत्तर प्रदेश है, बिहार है, बंगाल है और ~~उधर~~ उधर पश्चिम की तरफ जाएं तो महाराष्ट्र और गुजरात राज्य और एक हिस्सा राजस्थान का। यहां अन्न का संकट आया, अन्न की कमी आयी, लेकिन मैं ~~यह~~ आपसे यह कह सकता हूं कि हमने उसका मुकाबला करने की पूरी कोशिश की है। केवल हम बाहर के अनाज से नहीं, बल्कि अपने देश के उन सूबों से जैसे पंजाब, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश जहां के मध्यप्रदेश, जहां अन्न कुछ जरूरत से वहां की जरूरत से ज्यादा पैदा होता है, वहां से अनाज हमने जल्दी जल्दी भेज कर उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल महाराष्ट्र और गुजरात पहुंचाया

है । मैं यह तो नहीं कहता कि कुछ कठिनाई हट गई है, लेकिन इतना कहने की हिम्मत जरूर रखता हूं कि जिन्होंने बीस दिन पहले या एक ह महीने पहले इन सूबों को देखा होगा, आज वे पायेंगे, वहां जाने पर कि वह परेशानी और बेचैनी आज नहीं है । इस तरह हमें कोशिश करनी पड़ेगी कि हम अगले महीने-दो महीनों में खास तौर पर जत्न और इन्तजाम करें । जिसके पास जितना है, उससे वह ज्यादा खर्च न करे । हम अपने खर्चे को भी घटा सकें, अन्न के खर्चे को, तो उसे भी घटाएं । मैं चाहता हूं कि हरेक शहर का रहने वाला, हरेक गांव का रहने वाला, अपने पड़ोसी को देखे, कहां मुसीबत है, कौन तकलीफ उठा रहा है और अगर हमें अपने खाने में कुछ कमी करके भी दूसरे को खिलाना पड़े, तो उसके लिए तैयार रहने की जरूरत है । घबरा कर अपने अपने घरों में हम कुछ ज्यादा रख लें, यह
मुनासिब नहीं है और मुझे विश्वास है कि जो आज एक स्थिति आई है
बात जो आज एक हमें टेढ़े मौके का मुकाबला करना है, उसमें हम इस हिम्मत, इस बहादुरी और इस दूरअंदेशी से काम लें, जिसमें देश का यह सवाल कठिन न बने । मैं यह समझता हूं कि आज के ज़माने में, अगले दो-तीन महीनों में न दावतों की जरूरत है, न डिनर्स की जरूरत है, न लंचिज़ की जरूरत है । मेरा मतलब व्यक्तिगत नहीं, जो ये बड़ी बड़ी दावतें या छोटी-मोटी दावतें होती हैं, उन्हें हमें बन्द करना होगा । मिनिस्टरस् भी न कोई दावत मंजूर करेंगे, न कहीं जायेंगे, न कोई दावत लेंगे और न कोई पार्टीज़ होंगी । मैं जानता हूं कि इससे कोई बहुत बचत की बात नहीं है, लेकिन आज देश का एक मानस तैयार करना है, देश का दिमाग तैयार करना है और हमें यह दिखलाना होगा कि जो आज कमियां हैं, उन कमियों को अगर उसमें हम भी कुछ अपने को उसमें लगा सकें, तो उससे देश को एक मार्ग मिलेगा, एक रास्ता मिलेगा । यह असली सवाल तो यह है कि हम अपने देश में ज्यादा अनाज पैदा करें और मैं उसके ब्यौरे में नहीं जाना चाहता, लेकिन हमने जो कदम

उठाने का इरादा किया है, हम जिस तरह से किसानों के अनाज की कीमत को बढ़ाना चाहते हैं, जिस तरह किसानों को बगैर मुसीबत पहुंचाये सरकार उनसे अनाज खरीदना चाहती है और हम जो दूसरी और बातें करना चाहते हैं, मुझे विश्वास है कि अगले ~~कम~~ दो बरस के अन्दर हम अपनी ऐसी हालत बना सकेंगे कि जिसमें आज जैसी स्थिति का हमें मुकाबला न करना पड़े। हमें यह भी ध्यान में रखना है कि अन्न तमाम अनाज पैदा होगा अच्छा खाद देने से, पूरी तरह से पानी देने से, या किसानों को कर्ज़ देने से या अच्छी बीज़ और अच्छे जानवरों के कारण, लेकिन असली ताकत दिलों में रहती है, मनों में रहती है। आज करोड़ों के किसान अगर यह इरादा कर ले कि हम एक आन्दोलन के रूप में, खेती की पैदावार को बढ़ाएंगे, तो समय बदल सकता है, हालत बदल सकती है। कुछ हमें गान्धी जी की उस भावना को अपनाना होगा। जब हम आन्दोलन चलाते थे, गांव गांव में जाते थे और ~~उनमन~~ आज इस बात की ज़रूरत है कि हम गांवों में जाएं, हम खेत-खेत पर जाएं, हम अपने ऊपर यह जिम्मेदारी उठाएं कि देश के अन्दर, गांवों के अन्दर किसानों में ज्यादा से ज्यादा पैदा करने का एक आन्दोलन चला देंगें। मैं चाहता हूं कि हम सब आज उस भावना से प्रेरित हों। और भी दूसरे सवाल हैं। मैं किसी चीज़ को आपसे छिपा कर और ~~ब~~ दबा कर नहीं रखना चाहता। आज कीमतें बढ़ रही हैं, मूल्य बढ़ा हुआ है, ज़रूरी सामान भी ज्यादा कीमत पर मिलते हैं, कपड़ा है, तेल है, चीनी है, गुड़ है, दियासलाई है, छोटी मोटी ऐसी चीजें जो रोज की हमारी जिन्दगी की चीजें हैं, उनका भी दाम बढ़ा हुआ है और उसका ~~भी~~ असर किसान पर भी पड़ता है, लेकिन उसपर भी, उनके लिए भी हमें रोक लानी होगी। वैसे कीमतों का बढ़ना हमें देखना पड़ेगा, उसके पीछे कुछ मौलिक बातें हैं, कुछ ~~हमारी~~ ~~क्या~~ हमारी क्या आर्थिक पालिसी और नीति है, उसपर

17

भी वह बात निर्भर करती है ।

आज हमने पिछले १५ साल के अन्दर तीन प्लानों में बीस हजार करोड़ रूपया खर्च किया है और खर्च करने का इरादा रखते हैं, बीस हजार करोड़ रूपये से ज्यादा । क्या हम कभी कल्पना भी कर सकते थे कि इस देश में हम दस-बारह वर्ष के अन्दर, १७-१८ हजार करोड़ रूपया खर्च कर लेंगे । लेकिन जब हम रूपया इन्वेस्ट करते हैं, लगाते हैं, तो उसी के अनुसार हमें पैदा भी करना चाहिए । अगर रूपये के इन्वेस्टमेंट के साथ साथ हमारी पैदावार न बढ़े, तो फिर ये जो नोट बड़ी मात्रा में फैलते हैं, उससे एक इन्फ्लेशन पैदा होता है, उससे कीमतें बढ़ती हैं और आज एक ऐसा अवसर और समय है, जब हमें सोचना पड़ेगा कि इन कीमतों की बढ़ती हुई जो हालत है, उसपर काबू पाने के लिए हम क्या कदम उठायें । इसमें कोई पीछे हटने की बात नहीं, लेकिन मजबूत कदम उठाने की बात है । हमारा लक्ष्य एक ही है । हम वहीं पहुंचेंगे एक नया समाज बनाने के लिए, एक क्रान्तिकारी समाज हमें बनाना है । लेकिन हमारा हर कदम सोचा हुआ, समझा हुआ और एक मजबूती के साथ पड़ना चाहिए । मुझे विश्वास है कि आज जो हमारी साधारण आर्थिक स्थिति है हम उसे सरकार उसे अच्छी तरह से सोचेगी और हम एक रास्ता निकालेंगे, जिस रास्ते से हम ठीक ठीक आगे बढ़ सकें और जो आज बढ़ती हुई कीमतें हैं, उसपर कुछ काबू पा सकें ।

मैं देखना चाहता हूं अपने देश में और अगले कुछ सालों के अन्दर की कीमतें बन्धी हुई हों जरूरी सामान का । जो ज्यादा बड़ी खूबसूरत चीजें हैं, उनपर जो जितना पैसा खर्च करना चाहे करे और जो कीमत रहे वह रहे । लेकिन मुझे तो इस बात की चिन्ता है कि आज गरीब आदमी, आज कामन-मैन आज साधारण आदमी खा सके, पहन सके, रह सके और साथ ही साथ उसको ऐसी जरूरी चीजें, जिनका थोड़ा मैंने जिक्र किया, उसको मिल सकें और उनकी कीमतें बन्धी रहीं एक एक दुकान पर प्राइस, कीमत की लिस्ट और

सूची टंगी रहे और यह सरकारी अफसरों का काम होगा कि वे देखें कि वे कीमतें पूरी होती हैं और उनके अनुसार काम चलता है ।

वैसे अपने देश में हमें पड़ोसी देशों की पहले फिक्र करनी है और हम चाहते हैं कि जितनी हम अपने देश में शान्ति रख सकें और उसकी वजह से दुनियां में भी शान्ति बनाये रख सकें, वह एक बहुत ही ब जरूरी बात है । चीन का हमला हमारे देश पर हुआ उसका रूख नहीं बदला है । हम भी अपना रूख नहीं बदल सकते और हम चाहते हैं इज्जत और सम्मान के साथ बातचीत करने से कभी हम, हमारी देश की पीछे नहीं हटा है । क्या गान्धी जी और क्या जवाहर लाल जी, हमारा यह तरीका रहा कि चाहे हमारा कितना ही विरोधी और मुखालिफ क्यों न हो, अगर वह बात करना चाहे, तो हम शान और मर्यादा के साथ बात करने को तैयार हैं, लेकिन अगर तलवार की नोक पर या एटम बम के डर से कोई हमारे देश को झुकाना चाहे, दबाना चाहे, यह देश हमारा दबने वाला नहीं है और हमारी करोड़ों की ताकत, जनता की ताकत इतनी जबर्दस्त है कि जिससे हम किसी भी खतरे का मुकाबला कर सकते हैं ।

मुझे बड़ी खुशी है कि अभी अभी प्रेज़ीडेंट अयूब ने एक बड़ी अच्छी भावनाओं का प्रसार किया है, अच्छे ख्यालात जाहिर किये हैं । कल ही आपने अखबारों में देखा होगा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान की एका और मेलजोल की बात की है । मुझे उससे खुशी है और मैं उसका स्वागत करता हूं । मैं भी चाहता हूं और देश भी चाहता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में मेल रहे । आये दिन रोजे झगड़े होते हैं, सरहदों पर गोलियां चलती हैं, यह न पाकिस्तान के लिए अच्छा है और न हिन्दुस्तान के लिए अच्छा है । लाखों भाई अगर उधर से इधर आएं और हम

इसे रोक न सकें, तो यह हमारे लिए कोई गौरव की बात नहीं है, इसलिए मेल और समझौता जैसा कि मैंने कहा आदर और सम्मान के साथ एक दूसरे की बात को समझ कर हम कोई रास्ता और उपाय निकालना चाहें, तो उसे निकालना चाहिए। मुझे भरोसा है कि अगले कुछ महीनों में हम अपनी बातें कर सकेंगे और एक ऐसी भावना मेलजोल की पैदा कर सकेंगे, जिससे एक रास्ता ठीक रास्ता निकल आए।)

हमारे पड़ोस के हमारा प्रेम बर्मा से, लंका सीलोन से, नेपाल से, अफगानिस्तान से, ये सभी हमारे मित्र देश हैं। कुछ कठिनाइयां कभी कभी आ जाती हैं, कुछ सीलोन में भी हैं, बर्मा में भी है। मुझे खुशी है कि सीलोन के प्राइम-मिनिस्टर ने यहां अक्टूबर के महीने में आना मन्जूर किया है। हम अपने सीलोन और लंका का जो प्रश्न है हिन्दुस्तानियों का, उसे मुझे भरोसा है कि हम हल करने में कामयाब होंगे। हमारे फारेन मिनिस्टर सरदार स्वर्ण सिंह जी बर्मा जा रहे हैं और मैं समझता हूं कि वहां से भी वहां जो आज कठिनाइयां और दिक्कतें हैं, उनको भी हम हल करने में कामयाब होंगे।

एक दुनियां में शान्ति का रास्ता जवाहर लाल जी ने हमें दिखलाया और आज भी दुनियां में शान्ति कायम रखने में हम जितनी अपनी ताकत है, लगाएंगे। हमारी नीति हम किसी बड़ी ~~बड़ी~~ शक्ति के साथ नहीं रहना चाहते। हम फौजी तरीके पर बड़े बड़े मुल्कों का मुकाबला न करें, लेकिन एक अपने दिलों में हम अपनी एक आजाद एक अलग जगह रखना चाहते हैं। हमारी ~~नीति~~ नीति चाहे वह नान-अलाइनमेंट की हो, चाहे को-एक्जिस्टेंस की हो, + चाहे डिसआर्मामेंट की हो, चाहे एण्टी-कालोनियलिज्म की हो या एण्टी-रेशलिज्म की हो, हमें उपनिवेश नहीं चाहते। हम पुर्तगाल की कालोनीज़ को मिटाना चाहते हैं। हम नहीं चाहते कि वे कायम रहें। हम काले और गोरे के रंग और भेद को बर्दाश्त नहीं करना चाहते, चाहे वह साउथ अफ्रीका में हो, या कहीं

और हो । हम उस नीति पर अड़े रहेंगे, लेकिन कोई शान की बात नहीं, जो सच है, सच्चाई का साथ देंगे, लेकिन एक बर्दाश्त के साथ, सहनशीलता के साथ ।

मैं आपका ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं, लेकिन दुनियां में भी हमारी कद्र तभी होती है, जब हम अपने देश में मजबूत हों, जब अपने देश में हमारी ताकत हो, जब हम देश से अपनी गरीबी को मिटा सकें, जब देश से बेरोजगारी को दूर कर सकें, तभी देश की ताकत बाहर की दुनियां पर भी पड़ती है । हमारा एका, हमारे अन्दर मेल यह जरूरी है । अगर हम साम्प्रदायिक और कम्यूनल झगड़ों में पड़ गये, अगर हम प्रदेशों के झगड़ों में पड़ें, अगर हम भाषा और जबान पर आपस में मतभेद रखने लगे । तो वह हमारी ताकत में बाधा डालेगा और इसलिए आज सारे देश को एक हो कर, एक राष्ट्रीयत की भावना से कठिन सवाल आये । मैं नहीं कहता कि कोई विरोधी दल हमारा खण्डन न करें सरकार की आलोचना न करे, जरूर करे । सरकार की जितनी बुराई करना चाहे, एक डैमोक्रेटिक तरीके से, एक लोकतंत्र के ढंग से करें । हम उसका स्वागत करते हैं, लेकिन कुछ ऐसा वक्त आता है, कुछ ऐसा सवाल आते हैं, जिसमें सारा देश, सारा राष्ट्र, सारी पार्टियां एक साथ खड़ी होती हैं और मुल्क के सवालों को हल करती हैं । खाने का सवाल, कोई ऐसा सवाल नहीं है, जिसपर आज पार्टी की बुनियाद पर हम उसको हल करने की कोशिश करें । लेकिन मैं छोड़ता हूं अपने तमाम साथियों पर कि वे इसपर गौर करें और विचार करें, लेकिन इतना आपसे निवेदन है कि राष्ट्रीय एका देश की एका को बनाये रख कर, अपना एक नया समाज बना कर,एक अपने समाज में नयी क्रान्ति और रेवोल्यूशन करके, हमको अपने देश को मजबूत बनाना है और वही दुनियां में हमें मजबूत बनाएगा ।

आखिर में, यह खाना-पीना, पहनना, सब जरूरी है । लेकिन देश बनते हैं केवल धन-दौलत से नहीं, रूपया पैसा होते हुए भी देश पीछे रहते हैं दुनियां की नजरों में

और अपनी नजरों में। बनता कैसे है देश ? देश बनता है गान्धी जैसे आदमियों से, जवाहर लाल जैसे आदमियों से, रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों से और यह क्या थी इनमें बात। एक चरित्र था, एक नैतिकता थी, एक कैरेक्टर था और अगर आज हम चाहते हैं कि हमारा देश आगे बढ़े, तो फिर ऐसे नौजवानों को जन्म लेना होगा, जो कैरेक्टर और डिस्पिलिन को अपने सामने रखेंगे अनुशासन को अपने सामने रखेंगे और अगर बाज डिस्पिलिन्ड नेशन, एक जुड़ा हुआ नेशन और राष्ट्र अगर आगे बढ़ा और हमने ऐसे लड़के और लड़कियों को अपने देश में हम पाएं, जो इस स्प्रिट और भावना के साथ देश को आगे ले जाएंगे, देश का मार्गदर्शन करेंगे, देश के नेता बनेंगे, जो हमारा भविष्य है, हमारा फ्यूचर है, वह उज्जवल है, इसमें कोई सन्देह नहीं। मैं इतना ही आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम दिखाने के लिए कोई काम नहीं करेंगे। हमें अपनी कामयाबी और सफलता का पूरा भरोसा है। मैं इत्मीनान से कहता हूं कि हम देश के काम को आगे बढ़ाएंगे, तेजी से बढ़ाएंगे, मजबूती से चलेंगे और अपने देश के प्रश्नों को हल कर भारत को दुनियां में एक ऊंचा से ऊंचा स्थान देंगे! बहुत धन्यवाद।

आपको याद है कि पंडित जी का प्यारा नारा हमेशा वह यहां खड़े हो कर उस ~~नारे को यहां खड़ा हो कर~~ उस नारे को यहां लगाते थे, मेरी हिम्मत बहुत नहीं पड़ती, लेकिन वह उनकी देन थी और आज के दिन खास तौर पर हम उसे भुला नहीं सकते। इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि तीन बार आप मेरे साथ उस नारे को लगायें।

-जयहिन्द-